Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-3, Issue-11, Dec-2013 Available online at www. isrj.net

हजरत मुहम्मद की शिक्षाएँ : एक विहंगम दृष्टि

मनोज कुमार स्वामी
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग हाजाई कॉलेज, हाजाई, असम

सारांश : नैतिक मूल्यों के अवतार हजरत मुहम्मद का व्यक्तित्व मानव जाति के इतिहास में अविस्मरणीय है। उन्होंने अपनी शिक्षाओं और उपदेशों द्वारा समाज में आपसी भाई-चारे और सौहार्द की भावना स्थापित कर मानव इतिहास में एक नई आधार व्यवस्था, एक नई सांस्कृतिक व्यवस्था, एक नई सामाजिक व्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था बनाई। उनकी ये शिक्षाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी कि उनके अपने युग में थी। प्रस्तुत शोध आलेख मानवता की संयुक्त धरोहर इन शिक्षाओं पर एक विहंगम दृष्टि डालने का विनम्र प्रयास है।

Keywords - मानवता, शिक्षाएँ, धर्म, संसार, हजरत मुहम्मद।

प्रस्तावना :

'सरकार आलम' हजरत मुहम्मद का व्यक्तित्व मानव जाति के इतिहास में अनुकरणीय है। उन्होंने किसी विशेष जाति, वंश या वर्ग के हित के लिए नहीं बल्कि दुनिया के मनुष्यों के हित के लिए काम किया। उनके सिद्धांत सारे संसार के मनुष्यों का पथ प्रदर्शन और मानव जीवन की सारी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करते हैं। उनकी शिक्षाएँ काल विशेष के लिए न होकर प्रत्येक काल और परिस्थिति के लिए लाभदायक हैं। उन्होंने अपनी प्रमुख शिक्षाओं द्वारा मानव जीवन के सभी पहलुओं को स्पर्श किया। उनकी शिक्षा का बुनियादी उद्देश्य मानवता को शिक्षित करना था। मानव जीवन को नई दिशा प्रदान करने वाली उनकी प्रमुख शिक्षाएँ इस प्रकार हैं --

(1) आचार सम्बन्धी शिक्षाएँ :

एक नैतिक गुरु के रूप में हजरत मुहम्मद स्वयं बुलंद नैतिक मूल्यों के अवतार थे। नैतिकता का उपदेश देने और सभी नैतिक अशुद्धियों को दूर करने के लिए उन्होंने अपने व्यक्तित्व द्वारा व्यापक और सुरक्षित आदर्श प्रस्तुत किए हैं। उनकी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य नैतिकता के चरमोत्कर्ष को उजागर करना था। एक हदीस (Hadith) के अनुसार, "आप लोगों में अच्छी नैतिकता वाला सबसे अच्छा है और मुमिन सबसे अच्छी नैतिकता है।"1 नैतिकता में उनकी मुख्य शिक्षा अल्लाह की खुशी तलाश करना है। उन्होंने पति या पत्नी, माता-पिता और बच्चों के प्रति अधिकारों और दायित्वों के नैतिक सिद्धांतों को निर्धारित किया, ताकि परिवार रूपी संस्था में अच्छे संस्कारों का बीजारोपण हो। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि पति को अपनी पत्नी के प्रति अच्छा व्यवहार करना चाहिए।

हजरत आयशा के शब्दों में पवित्र पैगम्बर के अनुसार, "आप लोगों के बीच सबसे अच्छा वह है जो अपने परिवार के साथ अच्छा व्यवहार करता है और मैं अपने परिवार के साथ सबसे अच्छा व्यवहार करता हूँ।"2 अच्छी पत्नी के विषय में उन्होंने कहा, "अच्छी पत्नी वह है जिसे देखकर पति को प्रसन्नता हो।"3 हजरत मुहम्मद के अनुसार संतान चाहे लड़का हो या लड़की दोनों समान हैं। उनके बीच भेद-भाव करना गलत है उनके अनुसार, "जिस व्यक्ति को लड़की पैदा हुई है उसे न दफनाना चाहिए और न ही लड़के की चाह में उसे अपमानित करना चाहिए। अगर वो लड़की को नीचा नहीं दिखाता है तो जन्नत में अल्लाह उसको प्रवेश करेंगे।"4 माता-पिता के प्रति आज्ञाकारिता और उनके प्रति सम्मान की भावना को उन्होंने जन्नत का द्वार बताया है।

(2) समाज सम्बन्धी शिक्षाऐं :

हजरत मुहम्मद की समाज सम्बन्धी शिक्षाऐं समाज में आपसी भाई-चारा और सौहार्द की भावना स्थापित करती है। उनके अनुसार यदि मनुष्य को अल्लाह पर भरोसा है तो उसे अपने परिवार ही नहीं बल्कि रिश्तेदार और अड़ोसी-पड़ोसी के साथ भी अच्छा व्यवहार रखना चाहिए तथा दुःख और संकट के क्षणों में उनकी मदद के लिए सदा तैयार रहना चाहिए। अपने हृदय से ईर्ष्या और द्वेष की भावना को निकालकर खुदा के बंदों को भाई-भाई बन कर रहना चाहिए। "वह व्यक्ति खुदा का सच्चा बंदा नहीं है, जो स्वयं भरपेट खा रहा है और उसका पड़ोसी भूखा है।"5 पैगम्बर द्वारा दी गई सामाजिक शिक्षाओं का पालन करने वाला समाज विश्व की समृद्धि और उन्नति को प्राप्त कर सकता है।

(3) राजनीति सम्बन्धी शिक्षाऐं :

राजनीति के क्षेत्र में हजरत मुहम्मद ने मानवता का पाठ पढ़ाते हुए व्यक्ति पर व्यक्ति की सत्ता एवं सम्प्रभुता का विरोध करते हुए खुदा की सत्ता स्थापित की। सामूहिक विषयों पर उन्होंने परामर्श और बुनियादी मानवाधिकारों की जरूरत पर बल दिया। मुस्लिम राज्यों की उन्नति के लिए उन्होंने कहा कि जो न्यायाधीश सत्य को पहचानता है और सत्य के पक्ष में अपना फैसला देता है, उसे जन्नत नसीब होती है।

(4) अर्थनीति सम्बन्धी शिक्षाऐं :

हजरत मुहम्मद की अर्थनीति सम्बन्धी शिक्षा के दो महत्त्वपूर्ण पहलू विचार और क्रिया है। वैचारिक शिक्षा के अन्तर्गत उन्होंने कड़ी मेहनत और ईमानदारी से श्रम करने पर जोर दिया है। उनके अनुसार, "कठिन परिश्रम करने वाला ईमानदार मजदूर अपने मालिक का शुभचिंतक है,सबसे अच्छा व्यक्ति (खुदा का दोस्त) है।"6 व्यापार को उन्होंने आय का सर्वोत्तम स्रोत माना है। कालाबाजारी के वे घोर विरोधी थे। उनके अनुसार व्यक्ति के शोषण का मुख्य कारण ब्याज और व्यक्ति की नैतिकता और चरित्र को नष्ट करने वाली सबसे बड़ी बुराई मद्यपान है। इसलिए उन्होंने ब्याज से, शराब और व्यभिचार से होने वाली आय को अवैध करार दिया है। वर्तमान युग में भी पैगम्बर की अर्थनीति सम्बन्धी ये शिक्षाऐं किसी भी समाज की आर्थिक समस्याओं को सुलझाने का एकमात्र स्रोत है।

(5) युद्ध सम्बन्धी शिक्षाऐं :

हजरत मुहम्मद ने धर्म की रक्षा और स्थायित्व के लिए, क्रूरता को रोकने के लिए, शांति स्थापित करने के लिए तथा समाज के दीन-हीन लोगों की रक्षा के लिए लड़ने का आदेश दिया। उन्होंने नस्लीय श्रेष्ठता के लिए, धन के लालच के लिए, बदले और सर्वनाश की भावना के लिए युद्ध का निषेध घोषित किया। उनके अनुसार युद्ध में औरतों, बच्चों, बूढ़ों, निःशक्त रोगियों और शांतिप्रिय नागरिकों को मारना अपराध है। उन्होंने सत्य का संदेश फैलाने, अपनी बात पर बने रहने तथा राजनीतिज्ञों के सम्मान पर भी जोर दिया। सारांशतः उन्होंने खुदा की आज्ञा और निर्णय जारी करने के लिए लड़ने को कहा। इनकी शिक्षाओं का अनुसरण करके युद्ध में होने वाले अपराधों से बचा जा सकता है।

(6) धर्म सम्बन्धी शिक्षाऐं :

धर्म व्यक्ति की प्रथम और महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। धर्म व्यक्ति के अंदर की पशुता का नाश करता है। धर्म के क्षेत्र में हजरत मुहम्मद की वास्तविक उपलब्धि यह है कि उन्होंने पारंपरिक विश्वासों और पूजा के तरीकों के बजाए स्वच्छता, wazoo, slah, जकात और रोजे को सच्चे धर्म का आधार माना है। उनके अनुसार "इस्लाम की नींव कलमा-ए-शहादत, तौहीद (अल्लाह की एकता) तर्कसंगत दृष्टिकोण, सलाह, जकात, हज और रोजा पर है।"7 उन्होंने शरीर और आत्मा की आवश्यकताओं का एकीकरण किया, इस दुनिया और इसके आगे के फासले को निर्मूल किया, खुदा और बादशाह के बीच के अंतर को मिटाया। इस दुनिया को दूसरी दुनिया तक जाने का साधन बनाया और बादशाह को खुदा बनाने की बजाए स्वयं को खुदा का दूत बताकर, स्नेहमयी पिता के रूप में आवाम की रक्षा की।

(7) मनोविज्ञान सम्बन्धी शिक्षाएं :

मानव मनोविज्ञान भावनाओं का संश्लेषण है। मनोवैज्ञानिक भावनाओं के कई पक्ष हैं परन्तु हजरत मुहम्मद ने सुख एवं दुःख की स्थिति में समता बनाए रखने का संदेश दिया। उन्होंने घमंड और लालच के निषेध की बात कही। आत्मनियंत्रण और धैर्यता पर बल देते हुए उन्होंने अल्लाह द्वारा किये गए वैभव्य और वर्गीकरण को स्वीकार करने की आज्ञा दी। मनोविज्ञान सम्बन्धी उनकी शिक्षाएं आज भी व्यक्ति और समाज के विकास में सहायक हैं।

(8) क्रांति सम्बन्धी शिक्षाएं :

सामाजिक जीवन के शोधन और सुधार तथा विकास और कल्याण के लिए क्रांति अपरिहार्य है। पैगम्बर का 'जिहाद' संतुलन, संयम, दया और सौन्दर्य का चरम उत्कर्ष है, जहाँ लम्बी अवधि की नीतियों के साथ-साथ तत्कालिक उपचार नाजुक स्थिति और मामलों के लिए भी कभी-कभी क्रांतिकारी विधियों का इस्तेमाल किया गया। पैगम्बर के क्रांतिकारी अधिनियम का चरम उत्कर्ष अर्थात विजय प्राप्त करने के साथ ही दिल और आत्मा पर भी विजय पाना था। मानवता को एक सच्ची और प्रगतिशील क्रांति देने के लिए एक ऐसे क्रांतिकारी समूह की आवश्यकता है जो साम्प्रदायिकता से मुक्त हो और सिर्फ खोखली नीतियों के स्थान पर व्यावहारिकता हो। ऐसा 'जिहाद' और पैगम्बर की शिक्षाओं के बल पर ही संभव है।

(9) प्रशासन सम्बन्धी शिक्षाएं :

कानून को तोड़ने के बजाए उसकी रक्षा करना और कानून तोड़ने वाले को रोकना अत्यन्त कठिन कार्य है। इस सम्बन्ध में हजरत मुहम्मद की प्रशासनिक शिक्षा के कुछ बुनियादी बिंदु इस प्रकार हैं -

(i) सभी प्रशासनिक पदों को अमानत के आधार पर वितरित कर सभी सरकारी अधिकारियों को जिम्मेदार ठहराना चाहिए।8

(ii) सभी सरकारी कर्मचारियों को उनके श्रम के अनुसार मजदूरी दी जानी चाहिए।9

(iii) अधिकारियों का मूल कर्तव्य सार्वजनिक सेवा है इसलिए उन्हें जनता से मिलकर उनकी समस्याओं के समाधान का प्रयास करना चाहिए।10

पैगम्बर के अनुसार प्रशासनिक अधिकारियों को अपना पद संभालने के बाद अपने कार्य में क्षमता और कुशलता अर्जित करने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए।

(10) न्याय सम्बन्धी शिक्षाएं :

पैगम्बर ने न्यायिक शिक्षा के माध्यम से जनता का मार्गदर्शन किया है। उन्होंने मानव मस्तिष्क या ऐतिहासिक अनुभव के स्थान पर अल्लाह की संप्रभुता को कानून का स्रोत माना है, जो सभी दोषों से मुक्त है। उनकी कानूनी शिक्षा में बाह्य संरचना के बजाए सच्चाई और नैतिकता पर बल दिया गया है। इसके अलावा उन्होंने कानून और नैतिकता की एकता का सिद्धांत प्रस्तुत किया जो त्वरित और आसान न्याय में मदद करता है।

(11) स्वास्थ्य सम्बन्धी शिक्षाएं :

पैगम्बर का कथन – "खुदा ने हर बीमारी के लिए इलाज बनाया है।"11 - इस असीमित अनुसंधान और दवा के विभिन्न विभागों की विशेषता की ओर मार्गदर्शित करता है। इसके अलावा उन्होंने मानवता को एक सुनहरा सिद्धांत दिया कि जब दवा के प्रभाव और रोग की प्रकृति के बीच एकरूपता हो तो व्यक्ति खुदा की कृपा से ठीक हो जाता है। उन्होंने रोगों को ठीक करने का उपाय बताते हुए कहा कि चिकित्सक को चिकित्सा शुरू करने से पहले दवा के ज्ञान में विशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए।

(12) नारी सम्बन्धी शिक्षाएं :

पैगम्बर लिंग भेद के विरोधी थे। वे केवल पुरुषों के ही नहीं बल्कि महिलाओं के भी गुरु थे। वे ईद और जुम्मे की नमाज में अपना भाषण पहले पुरुषों को फिर महिलाओं को देते थे। शिक्षण कार्य मस्जिद में होता था। तत्कालीन महिलाओं में युद्ध क्षमता और शल्य चिकित्सा का कौशल था, जो पैगम्बर की शिक्षाओं का परिणाम था। इसी वजह से मुस्लिम महिलाओं ने अपने

प्रति होने वाले क्रूर और अमानवीय व्यवहार का आत्मविश्वास और निर्भयता से सामना किया। इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार प्रत्येक मुसलमान पुरुष और स्त्री के लिए ज्ञान की तलाश धार्मिक और मानवीय कर्तव्य है।

(13) गुलाम सम्बन्धी शिक्षाएं :

दास किसी भी समाज का सबसे कमजोर, दीन और शोषित समुदाय है। उनके जीवन, सम्पत्ति, सम्मान, आश्रय और स्वास्थ्य पर कोई ध्यान नहीं देता। परन्तु पैगम्बर ने अपनी शिक्षाओं के माध्यम से इनकी सहायता और मार्गदर्शन किया है। उन्होंने आजाद व्यक्तियों और गुलामों के लिए समान व्यवस्थाएं की थी। जहाँ आजाद व्यक्तियों को शिक्षा मिलती थी वहीं गुलामों को भी शिक्षा लेने का अधिकार था। उन्होंने नस्लीय भेदभाव को नजरअंदाज कर अपनी शिक्षा के दरवाजे गुलामों के लिए भी खोल दिए। इमाम तिर्मिजी की पुस्तक के अनुसार हजरत मुहम्मद ने गुलामों को क्षमा करके उन्हें अच्छी आदतें सिखाने का आदेश दिया।12

(14) बच्चों सम्बन्धी शिक्षाएं :

बच्चे किसी भी देश का भविष्य होते हैं। इसलिए किसी भी देश की प्रगति का रहस्य बच्चों को दी गई अच्छी शिक्षा और प्रशिक्षण में निहित होता है। हजरत मुहम्मद के अनुसार एक पिता का अपने के लिए सबसे अच्छा उपहार अच्छी शिक्षा और प्रशिक्षण है।13

निष्कर्ष :

संसार के सभी धर्मों और मानव इतिहास में पहली बार हजरत मुहम्मद ने अपनी इन शिक्षाओं के बल पर एक नई आधार व्यवस्था, एक नई सांस्कृतिक व्यवस्था, एक नई सामाजिक व्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था बनाई। उन्होंने केवल काल्पनिक योजना ही पेश नहीं की बल्कि उसको व्यवहार में लाकर सारे संसार को दिखा दिया कि जो सिद्धान्त वो पेश कर रहे हैं उसके आधार पर जीवन कैसा बनता है और दूसरे सिद्धान्तों के जीवन के सम्मुख यह कितना पवित्र और कितना शुद्ध है। उनकी शिक्षाएं मानवता की अमूल्य धरोहर है। संसार का कोई भी व्यक्ति इनसे लाभ उठा सकता है।

संदर्भ सूची :

1. तिर्मिजी, अध्याय: हुस्न-उल-खुलाक, 1/723.
2. अबू दाऊद, किताब-उल-निकाह, 2/135.
3.निसाई (Nisai), किताब-उल-निकाह, 2/27.
4.अबू दाऊद, किताब-उल-अदाब, 3/611.
5.मुस्लिम, किताब-उल-ईमान, 40/1.
बुखारी, किताब अलअदाब, 3/501.
6.मिश्कात (Mishqat), किताब-उल-बुयु (Buyu), 2/5.
7.बुखारी, किताब-अल-निकाह, 2/59.
8.मुस्लिम, किताब-उल-ईमान, 1/152.
अबू दाऊद, किताब-उल-जनेज (Janaiz), 1/784.
9.मुस्लिम, किताब-उल-अमारह, 3/134.
10.अबू दाऊद, किताब-उल-कजाह, (Qazah), 3/60.
11.डॉ. मुहम्मद खालिद अल्वी, इंसान-ए-कामिल, पृष्ठ - 447.
12.तबकात-ए-इब्ने साद, 5/221.
13.तारिख-ए-बगदाद, 5/108.